मानव चेतना

HUMAN CONSCIOUSNESS

प्रो. ईश्वर भारद्वाज

मानव चेतना

Human Consciousness

डॉ. ईश्वर भारद्वाज
पी.–एच.डी., डी.लिट्
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
मानवचेतना एवं योगविज्ञान विभाग
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उत्तराखंड)

University Department of Yoga RU
No/PGDY/ 503
Library

GRANTHBHARATI DISTRIBUTORS
Pustak Path, Upper Bazar, Ranchi-1
Ph. : 0651-2225467, Mob. : 9431115029
GRANTHBHARATI DISTRIBUTORS

सत्यम् पब्लिशिंग हाउस
नई दिल्ली–110059

विषय-सूची

शुभाशंसा III

प्राक्कथन V

अध्याय – **प्रथम** 1-15

विषय प्रवेश

चेतना का अर्थ

चेतना का क्षेत्र

मानव चेतना

- पश्चिमी विज्ञान में मानव चेतना का स्वरूप
- आधुनिक मनोविज्ञान में मानव चेतना

मानव चेतना की वर्तमान संकटयुक्त स्थिति

समाधान के वर्तमान प्रयासों की समीक्षा

समग्र अध्ययन की अनिवार्यता

सार्थक समाधान का स्वरूप

संदर्भ सूची

अध्याय – **द्वितीय** 16-50

दार्शनिक चिंतन में मानव चेतना

वैदिक चिंतन में मानव चेतना

- वेदों में मानव चेतना
- औपनिषदिक चिंतन में मानव चेतना

बौद्ध एवं जैन दर्शन में मानव चेतना

- बौद्ध दर्शन में मानव चेतना
- जैन दर्शन में मानव चेतना

षड्दर्शन में मानव चेतना के सूत्र

- न्याय दर्शन में मानव चेतना
- वैशेषिक दर्शन में मानव चेतना
- साँख्य दर्शन में मानव चेतना
- योगदर्शन में मानव चेतना
- मीमांसा दर्शन में मानव चेतना
- वेदान्त दर्शन में मानव चेतना
  - अद्वैत वेदान्त में मानव चेतना
  - विशिष्टाद्वैत दर्शन में मानव चेतना

संदर्भ सूची

अध्याय - तृतीय 51-128

मानव चेतना - वैज्ञानिक दृष्टि

प्राचीन भारतीय विज्ञान की विविध धाराओं में मानव चेतना

- आयुर्विज्ञान में मानव चेतना का स्वरूप
  - मन
  - अर्थ
  - स्थिति
  - मानव चेतना का केन्द्रीय तत्त्व-जीवात्मा
- तंत्र विज्ञान में मानव चेतना का स्वरूप एवं आयाम
  - कुण्डलिनी
  - षट्चक्र
  - नाड़ियाँ
- ज्योतिर्विज्ञान में मानवीय चेतना

पाश्चात्य विज्ञान की दृष्टि में मानव चेतना

चेतना के क्वाण्टम सिद्धान्त

- सृष्टि के कण-कण में सक्रिय परमात्म सत्ता
- वेदान्त के विज्ञान में निहित है सारा तत्त्वज्ञान

मानव चेतना के सम्बन्ध में शरीर रचना एवं क्रियाविज्ञान के अनुसंधान

- जादुई जीन्स में समाये चेतना के रहस्य

तंत्रिका विज्ञान में मानव चेतना सम्बन्धी अनुसंधान

- चेतना : सेरीब्रल कॉर्टेक्स की भूमिका

- चेतना और स्वप्न
- चेतना : थैलेमस की भूमिका

मानव चेतना की खोज में मनोविज्ञान का जन्म एवं विकास की विविध धाराएँ

मनोविज्ञान की विविध शाखाओं में मानव चेतना सम्बन्धी प्रयोग

परामनोविज्ञान की अवधारणा एवं सुविख्यात परामनोवैज्ञानिक

परामनोविज्ञान के मानव चेतना सम्बन्धी विविध अनुसंधान

परामनोवैज्ञानिक अनुसंधानों की वैज्ञानिकता का मूल्यांकन

संदर्भ सूची

अध्याय – चतुर्थ **129-203**

मानव चेतना के रहस्य

जन्म और जीवन

- जन्म
- जीवन

भाग्य और पुरुषार्थ

- भाग्य
- पुरुषार्थ
- धर्म
- अर्थ
- काम
- मोक्ष

कर्मफल विधान

- कर्म
- कर्म के प्रेरक तत्त्व
- कर्म के भेद
- पातंजल योग सूत्र में कर्म के प्रकार
- कर्म, अकर्म और विकर्म
- कर्मफल विधान

संस्कार और पुनर्जन्म

- संस्कार

- पुनर्जन्म

मानव चेतना की अवस्थाएँ

तीन शरीर

पंचकोश

- अन्नमय कोश
- प्राणमय कोश
- मनोमय कोश
- विज्ञानमय कोश
- आनन्दमय कोश

सप्तचक्र

- मूलाधार चक्र
- स्वाधिष्ठान चक्र
- मणिपूर चक्र
- अनाहत चक्र
- विशुद्धि चक्र
- आज्ञाचक्र
- सहस्त्रार

मानव चेतना के विविध आयामों को जाग्रत करने वाली महाशक्ति कुण्डलिनी

मानव चेतना की सीमाएँ और सम्भावनाएँ

संदर्भ सूची

अध्याय - पंचम 204-286

मानव चेतना के विकास की प्रणालियाँ

मानव चेतना के विकास की आवश्यकता एवं अनिवार्यता

मानव चेतना के विकास हेतु विविध दार्शनिक धाराओं की विविध दृष्टियाँ

- न्याय दर्शन में चेतना की विकास प्रणाली
- वैशेषिक दर्शन में चेतना के विकास की प्रणाली
- साँख्य दर्शन में चेतना के विकास की प्रणाली
- योग दर्शन में चेतना के विकास की प्रणाली
- मीमांसा दर्शन में चेतना की विकास प्रणाली
- वेदान्त दर्शन में चेतना की विकास प्रणाली

- समकालीन भारतीय दर्शन में चेतना की विकास प्रणाली
  - स्वामी विवेकानन्द जी का चेतना के विकास सम्बन्धी दृष्टिकोण
  - श्री अरविन्द की चेतना के विकास सम्बन्धी दृष्टि
  - श्री अरविन्द की चेतना के विकास की प्रणाली

यूनानी दार्शनिकों की मानव चेतना के विकास सम्बन्धी अवधारणाएँ

- पाइथागोरस का मानव चेतना के विकास सम्बन्धी मत
- हेराक्लाइटस का मानव चेतना के विकास सम्बन्धी मत
- मानवीय चेतना के विकास सम्बन्धी डेमॉक्रिटस की दृष्टि
- सुकरात के मानवीय चेतना के विकास सम्बन्धी विचार
- प्लेटो के मत में मानव चेतना के विकास की प्राप्ति
- अरस्तु का मानवीय चेतना के विकास सम्बन्धी दर्शन
- मानवीय चेतना के विकास सम्बन्धी स्टोइक दार्शनिक एपिक्यूरस के विचार
- नव प्लेटोवादी दार्शनिक प्लोटिनस के मत में मानवीय चेतना का विकास
- ईसाई पादरी संत औगस्टीन का चेतना के विकास सम्बन्धी मत

मानव चेतना के विकास सम्बन्धी मध्ययुगीन पाश्चात्य दार्शनिक की दृष्टि

आधुनिक युग के पाश्चात्य दार्शनिकों की चेतना के विकास सम्बन्धी मान्यतायें

- मानवीय चेतना के विकास सम्बन्धी स्पिनोजा का मत
- कांट के मतानुसार मानवीय चेतना के विकास का मार्ग
- मानव चेतना के विकास हेतु संकल्पित वैज्ञानिक अनुसंधान

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में मानव चेतना के विकास सम्बन्धी शोध

मनोविज्ञान के क्षेत्र में मानव चेतना के विकास सम्बन्धी अनुसंधान

परामनोविज्ञान के क्षेत्र में मानव चेतना सम्बन्धी विविध प्रयोग परीक्षण

विभिन्न धर्मों में चेतना के विकास की प्रणालियाँ

- बौद्ध धर्म एवं दर्शन में मानव चेतना के विकास की प्रणाली
  - आर्य अष्टांगिक मार्ग
- जैन धर्म में मानव चेतना के विकास की प्रणाली
  - सँवर प्राप्ति के साधन
  - पंच व्रत
- ईसाई धर्म में मानव चेतना के विकास की प्रणाली
- इस्लाम धर्म में चेतना के विकास की पद्धति

- इस्लाम के प्रधान सिद्धांत
- इस्लाम धर्म में आचार-विचार

- सिक्ख धर्म (गुरुमत) में चेतना की विकास प्रणाली
- हिन्दू धर्म
  - ज्ञानयोग
- ज्ञानयोग के साधन
- बहिरंग साधन
- अंतरंग साधन
  - कर्मयोग
- पातंजल योग सूत्र में कर्म के प्रकार
- वेदान्त कर्म के रूप
- श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार कर्म के प्रकार
  - भक्तिमार्ग
- भक्ति के विंविध रूप
- भक्ति और प्रपत्ति
- भक्ति के साधन
  - राजयोग
- राजयोग के अष्टांग साधन
  - मंत्रयोग
  - तंत्रयोग
- तंत्र साधना की अवस्थाएँ एवं साधन
- तंत्र साधना की प्रमुख आवश्यकताएँ
- तंत्र साधना में शिष्य/साधक

मानव चेतना के विकास हेतु विकसित सभी प्रणालियों का समीक्षात्मक मूल्यांकन

सार्वभौम प्रणाली का अनुसंधान

संदर्भ सूची

संदर्भ ग्रन्थ सूची 287-29

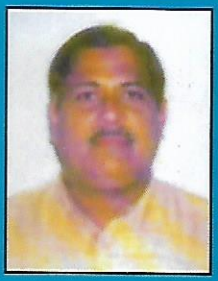

प्रो. ईश्वर भारद्वाज

'मानवचेतना' नामक इस ग्रन्थ के रचयिता भारत के लब्धप्रतिष्ठित योग मनीषि, मानवचेतना के मर्मज्ञ विद्वान, योगाचार्य प्रो. ईश्वर भारद्वाज, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मानवचेतना एवं योगविज्ञान विभाग, गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड। इन्होंने अपने विश्वविद्यालय में प्रथम बार योग की स्नातकोत्तर उपाधि प्रारंभ कर देश ही नहीं विदेश में भी योगशिक्षा की उच्चशिक्षा को प्रारम्भ किया। 'संन्यासयोग' पर पीएच-डी. तथा 'मानव चेतना' पर डी.लिट् की उपाधि प्राप्त की। ये योग सम्बन्धी संस्थाओं में सक्रिय भागीदारी के साथ विश्व के योगशिक्षाविदों में अग्रणी पंक्ति में गणनीय हैं। वि.वि. अनुदान आयोग, राष्ट्रीय योग संस्थान, केन्द्रीय योग एवं प्रा.चि. परिसर इंडियन योग एसोसिएशन (स्वास्थ्य मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा मान्य), इंडियन योग फेडरेशन, कलकत्ता आदि राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त संस्थाओं में अग्रणी भूमिका वाले प्रो. भारद्वाज की अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं। कनाडा तथा मॉरिशस में योग का प्रचार-प्रसार कर चुके हैं। भारत ही नहीं विदेशों में भी इनके शिष्य योग के प्रचार प्रसार में संलग्न हैं।

पुस्तक परिचय

'मानवचेतना' मानव-व्यवहार से सम्बन्धित चेतना सत्ता के लिए प्रयुक्त किया जाता है। चेतन सत्ता के प्रभाव से जड़ में जो चेतना आ गई है, वही मानवचेतना का क्षेत्र कहलाता है। इस ग्रन्थ में मानवीय चेतना की सत्तात्मक अनुभूति को दार्शनिक व वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास किया गया है। ऋषियों ने जहां आत्मचेतना का साक्षात्कार करके मोक्षशास्त्रों की रचना की, वहीं वैज्ञानिकों ने क्वांटम सिद्धान्त के माध्यम से चेतना को समझाने का प्रयास किया। मानवचेतना के रहस्यों का उद्घाटन तथा मानवीय चेतना के विकास की विभिन्न प्रणालियों का वर्णन करके मानव को देवत्व की ओर के जाने का मार्ग दिखाने का यह स्तुत्य प्रयास है।

₹ 300.00

ISBN : 978-93-80190-64-8

9 789380 190648

सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस

एन-3/25, मोहन गार्डन, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059

दूरभाष : 011-25358642 ई-मेल : satyampub_2006@yahoo.com